

12

MONDAY

Wk 33 □ 224-141

समानांतरवाद : रिपनोजा

JULY 2013

AUGUST 2013

Tbc-9 - P-VI

MB-8709000000

13

Dr. RANJIV RANJAN PANDHEY Assistant Professor
PHILOSOPHY, RBGR COLLEGE, Maharaajganj, siwan.

देकार्त ने अन्तरक्रिया प्रतिक्रियावाद एवं रिपनोजा ने समानांतरवाद को समर्थन दिया है। रिपनोजा ईश्वर की सर्वव्यापी सत्ता स्वीकार करता है। रिपनोजा ईश्वर को एक पूर्ण सर्वव्यापी सत्ता स्वीकार करता है। चिंतन एवं विस्तार अर्थात् मन एवं शरीर एक ही द्रव्य के दो गुण हैं। एक ही द्रव्य के दो पहलु हैं। जबकि देकार्त के अनुसार मन एवं शरीर अलग-2 हैं। मन व शरीर ईश्वर के आश्रय हैं। जबकि रिपनोजा का मन एवं शरीर साथ-2 एक-दूसरे से मिले हुए हैं। यद्यपि त्रिधात्मक रूप से अलग-2 दिखाई पड़ते हैं।

शरीर पर वाह्य पदार्थों का प्रभाव पड़ता है और उसमें निरंतर नवीन परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। इन परिवर्तनों या रूप भेदों का बोध मन को निरंतर होता रहता है। वाह्य पदार्थ शरीर को जिस रूप में प्रभावित करते हैं। मन उन्हें उसी रूप में जान लेता है। इससे स्पष्ट होता है कि मन व शरीर एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करते। शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन एक मात्र ईश्वर से सम्बंधित हैं। रिपनोजा दर्शने मन व शरीर के अद्वैत को स्वीकारता है। न तो मन शरीर को, न शरीर मन को प्रभावित करता है। मन में संकल्प-स्वातंत्र्य शक्ति नहीं है। हमारा मन जो भी कार्य करता है, वह पूर्व निश्चित कारणों से करता है।

रिपनोजा नियतिवाद में विश्वास करता है। रिपनोजा अनुसार यदि शरीर के अधिकार क्षेत्र से बाहर है कि मन को चिंतन में लगा सके। और मन के अधिकार क्षेत्र से बाहर है कि शरीर को गति का नियंत्रण कर सके। जो भ्रष्ट होता है। उसका पूर्ववर्ती कारण भी होता है - अतः सभी अनंत कारणों का आश्रय ईश्वर है। शरीर व मन ईश्वर पर आश्रित हैं। ईश्वर ही विश्व का मूल है। जबकि देकार्त मन व शरीर में द्वैत स्थापित करते हैं।

NOTES

T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
3	4	5	6	7		6	7	8	9	10	11
10	11	12	13	14		13	14	15	16	17	18
17	18	19	20	21		20	21	22	23	24	25
24	25	26	27	28		27	28	29	30	31	

TUESDAY
Wk 33 □ 225-140

13

AUGUST '13

अब हम मन से कार्य करते हैं। रूप में शरीर पर प्रभाव पड़ता है - जो संकल्प-विकल्प के और शरीर मन पर संवेदनाओं के रूप में प्रभाव डालता है। पीनीयल ग्रंथि मन व शरीर के मध्य सम्पर्कस्थल है। जहाँ पर क्रिया-प्रतिक्रिया होता है। यह अन्तःक्रिया-प्रतिक्रियावाद है।

समानांतरवाद के विरुद्ध तर्क

1. आकस्मिक अनुभवों की व्याख्या का अभाव -

स्विपनोजा ने शरीर एवं मनस के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है - कि शरीर एवं मन एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करते तथा वे आकस्मिक अनुभवों की व्याख्या नहीं कर सकते। कभी-कभी मानसिक कार्य में लगे होने पर किसी और की आवाज से हम चौंक पड़ते हैं तथा हमारा ध्यान टूट जाता है। यह मानसिक क्रिया में शारीरिक व्यापार का ही उदाहरण है।

2. औपकीय विकास में मनस की अवहेलना -

सांख्यसिद्धान्त में पुरुष-प्रकृतिसंग्रह से क्रमशः प्रकृति में विकास स्वरूप महत्त्व, अहंकार, दश-इन्द्रिया, मन की क्रमशः उत्पत्ति हुई।

3. सर्वमनसवाद - यदि समानांतरवाद के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया जाय, तो जहाँ कहीं शारीरिक क्रिया है, वहीं मानसिक क्रिया भी है। चाहे वह कितने भी निम्न-स्तर का क्यों न हो। इस तरह हम केवल मानव शरीर के कार्यों में ही बहिक जगत में सर्वत्र कहीं भौतिक परिवर्तन के मूल में मनस की सत्ता को स्वीकार कर सर्वमनसवाद अथवा मनस सब कहीं है के सिद्धान्त पर पहुँचता हैं।